तीसरी मजलिस

ज़ाकिर : सफ़वतुल उलमा मौलाना सैय्यद कल्बे आबिद नक़वी रहमत मआब

बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम। अलहमदो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन। अर्रहमानिर्रहीम। मालिके यौमिददीन।

कुरआने मजीद के सूरों में से पहला और अहमतरीन सूरा, वो सूरा कि जिसको इतनी अहमियत हासिल है कि रिवायात बताती हैं कि ये सूरा मक्की भी हैं और मदनी भी है। कुछ आयतें मक्की हैं। कुछ आयतें मदनी हैं। मक्की उनको कहा जाता है जो क़ब्ले हिजरत नाज़िल हुई और मदनी उनको कहा जाता है जो बादे हिजरत नाज़िल हुई हैं।

चाहे वो बादे हिजरत मसअलन रेसालत मआब (स0) मक्के में हों मक्के ही में नाज़िल हुई या रास्ते में नाज़िल हुई या किसी जगह नाज़िल हुई हैं वो लेकिन इस्तेलाह ये है कि बादे हिजरत जो आयतें नाज़िल हुई हैं वो मदनी कहलाती हैं लेकिन सूरा–ए–हम्द की ख़ुसूसियत ये है कि उसके अलावा जितनी आयतें हैं या मक्की हैं या मदनी हैं। क्योंकि या क़ब्ले हिजरत नाज़िल हुई हैं या बादे हिजरत नाज़िल हुई हैं। लेकिन सुर–ए–हम्द को अल्लाह ने दो मरतबा नाज़िल किया है। एक मरतबा हिजरत से पहले और एक मरतबा हिजरत के बाद , ये कोई सोच भी नहीं सकता कि दूसरी मरतबा इसलिये नाज़िल किया गया होगा कि (मआज़ अल्लाह) रसूल (स0) भूल गये होंगें, ज़ाहिर है कि हमारे यहाँ तो ये तसव्वुर ही नहीं ।

हमारे यहाँ तो नबी (स0) सहो व निसयान से बलन्द होता है। लेकिन जो लोग कहते हैं कि नबी भूल भी सकते हैं। नबी भूल सकते हैं। भूले हैं, नमाज़ भूल गये, गुस्ल भूल गये, बगैर गुस्ल के नमाज़ पढ़ा दी। न मालूम क्या क्या भूला करते थे। जो लोग जो ये कहते हैं कि भूल गये उनके नज़दीक भी ये मुमकिन नहीं है कि सूर–ए–हम्द भी भूल गये हों इसलिये कि ये तो हर नमाज़ में पढ़ा जाता था। इब्तेदा ही से जब से नाज़िल हुआ है नमाज़ में सूर–ए–हम्द की तिलावत जारी थी। लेहाज़ा न मुसलमानों के भूलने का सवाल था न (मआज़अल्लाह) रसूल के भूलने का सवाल था, तो भूलना तो मुमकिन ही नहीं फिर क्या हुआ कि दो मरतबा क्यों नाज़िल हुआ मेरी समझ में नहीं आता मसलहेते इलाही में मैं क्या जानूँ। मेरी समझ में जितना आया वो अर्ज़ कर रहा हूँ वो ये है कि कुरआन मजीद का नाज़िल होना ये भी एक अहम और अज़ीम और अल्लाह की नज़र में क़ाबिले यादगार चीज़ है। और इसलिये जिस शब में कुरआन नाज़िल हुआ उसको शबे क़द्र करार दे दिया।

इन्ना अनज़लनाहो फ़ी लैलतिल क़द्र। मैंने कुरआन को शबे क़द्र में नाज़िल किया और जिस शब में कुरआन नाज़िल हुआ इरशाद हुआ ''लैलतुल क़द्र ख़ैरूम मिन अलफ़ि फ़ेशहर'' शबे कद्र एक हज़ार महीनों से बेहतर है।'' यानी जिस महीने में जिस शब में कुरआन नाज़िल होगा वो एक रात हज़ार महीनों से बेहतर है। नबसे कुरआन एक मरतबा आयी थी शबे क़द्र असली। असली का मतलब यही जिसमें कुरान नाज़िल हुआ वो तो एक ही थी।

इसलिये ''इन्ना अनज़लनाहो '' मैंने कुरआन को नाज़िल किया ''इन्ना अनज़लना फ़ी लैलतिल क़द्र।'' अना नहनो नज़्ज़लना। मैंने कुरआन को नाज़िल किया ''इन्ना अनज़लना हम

ने कुरान को नाज़िल किया ये एक मरतबा हुआ तो एक शब थी जिसमें कुरआन नाज़िल हुआ लेकिन उसके बाद इरशाद किया है।

तनज़्ज़लुल मलाएकातो वर्रूहो फ़ीहा अब ये नहीं है कि नाज़िल हुवे इसमें मलक इसी एक शब में जिसमें कुरआन नाज़िल हुआ था इसमें मलायका भी और रूहे आज़म भी नाज़िल हुई अब लफ़्ज़ बदल गये। तनज़्ज़लु नाज़िल होते रहते हैं मलायका और रूहे अज़म नाज़िल होते हैं ये सिलसिला ये तसलसुल है अब ये नहीं कि एक शब थी बल्कि दिन गुज़रते—गुज़रते जब फ़िर वही ज़माना आता है जिस शब में नाज़िल हुआ था कुरान तो हर मरतबा उस शब में मलायका नाज़िल होते हैं। तो मालूम हुआ कि ये बाबरकत शब वो है जिसमें एक मरतबा कुरान नाज़िल होगा हमेशा क़यामत तक उस शब में मलायका नाज़िल होते हैं। अब ये मैं नहीं जानता कि कहाँ नाज़िल होते हैं। मेरे पास तो नाज़िल होकर कोई मलक नहीं आया, होंगें कोई साहब ऐसा मुमकिन है मैं क्या जानूँ कि जिनके पास ये मलक नाज़िल होकर आया करते हों और खाली ये भी मुमकिन है कि ढ़इया छूने आते हों कि ज़मीन छुई और चले गये लेकिन इरशाद होता है कि नहीं ढ़इया छुने नहीं आते हैं। बेइज़्ने रब्बेहिम मिन कुल्ले अम्र'' अल्लाह के अहकाम लेकर आते हैं तो अल्लाह के अहकाम लेकर आते हैं तो क्या कोई गठरी है कि कांधे पर रख जाते हैं।

खुद आयत बता रही है और सूर—ए—क़द्र बता रहा है कि मलायका नाज़िल होते हैं अहकाम लेकर तो कोई मंज़िल है जहाँ वो अहकाम पहुँचाया करते है और जिस तक वह अहकाम आते हैं और जो ज़िम्मेदार अर्ज़ है जहां अहकामे इसलाही आते हैं। (सलवात) हैं कोई ''साहबे अम्र'' जहाँ वो अम्र लेकर आते हैं तनज़्ज़लुल मलाएकतो। तो ये क्या है ये वो एक रात कि जिसमे कुरआन नाज़िल हुआ वो इतनी बाबरकत होगी। अब कुरान में जो जाने सूरा है जो रूहे कुरआन सूरा है जिसकी अहमियत ये कि पूरा कुरान सिमट कर उसके दामन में आ गया है यानी सूर—ए—हम्द क्या उसके नज़ूल से कोई बरकत हासिल नहीं होगी? क्या इसका नाज़िल होना कोई अहमियत नहीं रखता? क्या इसका नाज़िल होना कोई अज़मत नहीं रखता ? ज़ाहिर है कि जब कुरआन का नुज़ूल मैंने बताया इतना अहम तो वो सूरा जो अहमतरीन सूरों में है, उसका नज़ूल भी मामूली नहीं है। इससे भी अज़मत हासिल होगी। इससे भी बलन्दी हासिल होगी। मेरे ज़हन में जो आया वो यही है कि अगर सिर्फ मक्के में नाज़िल हुआ होता सूर—ए—हम्द तो मक्के का पलड़ा झुक जाता। मदीने का पलड़ा हल्का हो जाता । कुदरत चाहती थी कि अपने घर और नबी की तरफ़ मंसूब शहर, दोनों के पलड़ों को बराबर रखे लेहाज़ा सूर—ए—हम्द अगर एक मरतबा मक्के में नाज़िल हुआ और दुसरी मरतबा मदीने में नाज़िल हुआ ताकि दोनों पलड़े बराबर हों (सलवात) तो ये अहमतरीन सूरा है इस सूरे की इब्तेदा बल्कि हर सूरे की इब्तेदा है बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम से हाँ एक सूर—ए—नमल जिसके दरमियान में भी बिसमिल्लाह आई है वरना हर सूरे की इब्तेदा में बिसमिल्लाह है और एक सूरा बराअत ऐसा है कि जिसमें बिसमिल्लाह नहीं क्योंकि अल्लाह के ग़ज़ब से इब्तेदा हुई है।

ज़रा अज़मते बिसमिल्लाह मुलाहेज़ा फरमायें कि बिसमिल्लाह है रहमते इलाही का नमूना और सूराऐ बराअत है ग़ज़बे इलाही का ज़हूर काफ़िरों से ऐलान कि देखे बस अब जितने मोआहेदे थे वो सब ख़त्म। अब हम से तुम से कोई ताअल्लुक़ बाकी नहीं रहा। खैर इस मरतबा तो आ जाओ। आही गये हो तो आजा ओ लेकिन अब आइन्दा तुम क़दम नहीं रख सकते मक्के में। ''इन्नमूल मुशरेकून नजिस'' तुम्हारी नजासतें इस काबिल नहीं हैं कि इस पाक व पाकिज़ा ज़मीन पर क़दम रख सकों और आज तक किसी

मुशरिक को इजाज़त नहीं कि मक्क–ए–मोकर्रमा में क़दम रख सके। ''इन्नमल मुशरेकूना नजिस'' लेहाज़ा ऐलाने बराअत है कि अब हम से तुम से कोई ताअल्लुक़ नहीं है हम से तुम से कोई रब्त नहीं अब आइन्दा क़दम नहीं रख सकते। और ऐलान कब हो रहा है? ये नहीं कि ऐलान छपवा कर भेज दिया गया है काग़जपर लिखवा दिया गया है और हर जगह भेज दिया गया हो कि अब न आना। नहीं जब पूरी दुनया–ए–कुफ्ऱ मक्के में जमा है और हर तरफ़ से आ चुके हैं उस भरे मजमे में ऐलान करना है कि अब आइन्दा तुम्हें क़दम रखने की इजाज़त नहीं है अब तक जो होता रहा, हो चुका। किसी मुशरिक के आइन्दा इस ज़मीन पर पाक ज़मीन पर नजिस क़दम न आने पायें। ये ऐलान होता है उस मजमे में जहाँ दुनिया–ए–अरब का पूरा कुफ्ऱ व शिर्क का मजमा है।

अब आप ही बतायें क्या मुनासिब था मुझ ऐसे को भेज दिया जाये कि जिस का दिल दहल रहा हो जिसकी ज़बान काँप रही हो जो खौफ़ से दहशत ज़दा हो, इतना बड़ा मजमा, मुसलमान कम काफ़िर ज़्यादा, उनमें खुल कर ऐलान करना कि आइन्दा क़दम न रखना, तुम नजिस हो, तुम से मुआहेदे टूट चुके हैं तुम से अब सिवाए तलवार के हमारे दरमियान कोई फ़ैसला करने वाला नहीं है।

ये हर एक का काम नहीं था कि उस मजमे में जाकर खुल कर ऐलान कर सके लेहाज़ा निगाहे इंतेखाबे रेसालत (स0) ने चुना उसको जो ग़ालिबे कुल्ले ग़ालिब था। जिस को देख कर लोगों के पित्ते पानी हो जाते थे। जिस पर हैबत तारी नहीं होती थी जिसकी हैबत तारी होती थी। ये वो सूर–ए– बराअत है जिसकी तबलीग़ अली (अ0) के सिपुर्द की गयी। आप जानते हैं मशहूर वाक़ेआ है। कोई इख़्तेलाफी बात नहीं है सभी मानते है कि पहले एक साहब को दे दिया गया था। अभी तुम ही जाके पहुँचा दो । मालूम नहीं ये रसूल क्या–क्या करते हैं कि पहले दूसरे को दे दिया मेरी भी समझ में नहीं आया कि ये क्या हुआ करता है। लेकिन अगर रेसालत मआब पहले ही खुद अली (अ0) को दे दिया करते। हर जगह यही हुआ है। मसलन दावते जुलअशीरा, जहाँ आप कहते हैं कि कौन है मनज़ललज़ी यवारिज़नी कौन है जो मेरा बोझ उठाये अला अन यकून वसीयी व ख़लीफ़ती व वज़ीरी ताकि मेरा वसी व वज़ीर व ख़लीफा हो। अली (अ0) उठ खड़े हुए। कहा बैठ जाओ ऐ खुदा के रसूल (स0) क्यों बिठा रहे हैं क्या कोई और है उठने वाला? बैठ जाओ, फिर, कोई और है! जब सन्नाटा होता है फिर अली (अ0)खड़े हो जाते हैं अना, फिर कहते हैं बैठ जाओ अरे एक मरतबा आज़मा चुके अब दूसरी मरतबा क्यों बिठा दिया। आवाज़ देते हैं और कोई है जो मेरे इस बोझ को उठाये और फिर अली (अ0) उठते हैं अब आप ऐलान फरमाते हैं कि पहचान लो मेरे वसी, वज़ीर और ख़लीफ़ा को।

जंगे खंदक का मौक़ा आता है अम्र इब्ने अबदेवुद आवाज़ दे रहा है ऐ मुसलमानों आ जाओ मेरे मुकाबले पर यहाँ तक कहता है कि मेरी तो आवाज़ पड़ गयी। कहाँ तक पुकारूँ और भई तुम तो कहते हो कि अगर कत्ल हो गये तो जन्नत में जाओगे तो आओ या मुझे जहन्नम में भेज दो या खुद जन्नत में चले जाओ। मगर कोई मुकाबले पर नहीं आता। फिर जब रसूल (स0) कहते हैं कि कौन है जो इसके मुकाबले पर जाये तो अली (अ0) उठते हैं। कहते हैं बैठ जाओ। (सलवात) ऐ खुदा के रसूल (स0) ये क्यों बैठा रहे हैं, फिर कहते हैं है कोई, फिर सन्नटा, कान्नमा अल रूसहुम तैर ये मालूम होता है कि सरों पर तायर बैठे हैं। सर हिले नहीं वरना उड़ जायेंगें। खामोश बैठे हैं सब, फिर मजमे से अमी रूल मोमनीन (अ0) उठते हैं फिर आप बैठा देते हैं। ये क्या है। अरे आप बीमार थे, सर में दर्द था मगर पता तो चल जाता कि कौन अलम के लिये

चला गया है उसी वक्त रोक दिया होता नहीं ले गये ले जाओ। अच्छा अब दूसरे दिन तो समझ गये थे अब फिर। ये तीसरे दिन क्या अब कहते हैं कि लौला अतैन रायत अज़ अरजल करारा गैर फ़रार याज़ा बलल्लाहु वरसूलोहु व रसूलेही अब कल मैं अलम दूंगा। साहेबाने बलागत ग़ौर करें काहे पर ज़ोर रहे हैं रसूल ज़ोर दे रहे हैं नुक्तों का तर्जुमा अर्ज़ कर रहा हुँ। यक़ीनन –यक़ीनन हतमन। कल मैं अलम दूंगा तो ज़ोर दिया जा रहा है ''मैं'' अलम देने पर इसका मतलब यही है कि अब तक रसूल ने इलम नहीं दिया था किसी को। इसलिये कि रसूल के सर में शदीद दर्द था और जब निकले भी तो आप माथे पर पट्टी बांधे तीसरे दिन निकले हैं बस अब समझ लीजिये कि अली (अ0) और रसूल (स0)में कितना रब्त है कि उधर रसूल (स0) के सर में दर्द और इधर अली (अ0) की आंखें आ गयी हैं। यानी वही रब्त है जो कास–ए–सर को जिस्म से होता है। लेहाज़ा मौका है जो साहब चाहें! क्या बताऊँ कौन साहब ले गये और क्या हुआ क्या नहीं हुआ मुझको इससे क्या मतलब, रसूल ने जो कहा उतना ही अर्ज़ कर रहा हूँ ला आतैनल गदन रजल कल मैं मर्द को अलम दूंगा। मैं दूंगा और उसको दूंगा जो मेरी नज़र में मर्द है जो कर्रार है जो ग़ैरे फ़र्रार है जो पै दर पै हमला करने वाला है। जो मैदाने जंग से हटता नहीं अल्लाह व रसूल को दोस्त रखता है और अल्लाह व रसूल उसको दोस्त रखते हैं। ये मुत्तफ़ेक़ा अलैह हदीस है।

सय्यद बिन अबी वक़ास जो बसरा में शुमार होते हैं वो कहा करते थे कि काश ये तीन फज़ीलतें मिल जातीं जो अली अ0 को मिली हैं और वो जब उनको गिनवाते थे तो ये हदीस ख़ैबर भी थी, काश रसूल ये मेरे लिये कहते। तो मालूम हुआ कि मुसल्लेमात में है ये हदीस।

कल ऐ खुदा के रसूल आपके सर में दर्द था पता चला कि कौन ले गये रोक देते वापस बुला लेते दूसरे दिन कम से कम जो तीसरे दिन किया है ये क्यों होता है आख़िर ? मैं बताऊँ इसकी गरज़ क्या है आज तक ये कहा जाता है कि इतनी मोहब्बत करते थे रसूल अपने बच्चों से कि कभी कांधे पर चढ़ाऐ हुऐ हैं, फात्मा से इतनी मुहब्बत कि ताज़ीम के लिये उठ रहे है तो मालूम हुआ कि हर फज़ीलत को मुहब्बत की नज़र कर दिया जाता है।

लेहाज़ा रसूल स0 पहले औरों को मौका देते थे कि अरे भाई मैं रोकता नहीं हासिल कर सकते हो तो फज़ीलत हासिल कर लो और जब न हासिल कर सकते थे तो उस फज़ीलत का सेहरा उसके सर बांधते थे जो हक़दार हुआ करता था।

तो बइत्तेफ़ाक़ तारीख़ दे दिया सूर–ए–बरात और एक बुज़ुर्गवार लेकर चले और मदीने से दूर पहुँच गये और अब आयत उतरती है अब जिबराईल अमीन आते हैं और पैगाम पहुँचाते है कि अल्लाह का हुक्म है कि ला यबलोगक इल्ला अनत औराजलुन मतक तबलीग़ नहीं कर सकता सूराऐ बरात की या तो खुद जायें या वो जाये जो आपसे हो रजुल मिनक या वो मर्द जाये जो आपसे हो और रसूल (स0) ने बुलाया अली (अ0) को। कहा जाओ अली लेलो सूर–ए–बरात अब तुम जाकर तबलीग़ करो।

अमीरूल मोमनीन (अ0) रवाना होते हैं वो वक़्त है कि नमाज़े सुब्हा का वक़्त क़रीब, अज़ान हो चली है, सफें तैय्यार हैं, वो और एक बुज़ुर्गवार नमाज़ पढ़ाना चाहते हैं कि एक मरतबा नाक–ए– रेसालत की आवाज़ गूँजी। रसूल के नाक़े की आवाज़ को पहचाना लोगों ने और जब रोका, ठहर जाइये खुद रसूल (स0) तशरीफ ला रहे हैं। और जब गर्द का दामन चाक हुआ और जो मुंतज़िरे रसूल थे उनको जलव–ए–इमाम नज़र आया अमीरुल मोमनीन (अ0) आज नाक–ए–रसूल (स0) पर आपने क्यों ज़हमत की। आप काहे को तशरीफ लाये फ़रमाया कि

रसूल (स0) ने मुझे हुक्म दिया है कि सूर–ए–बरात ले जाऊँ। और तबलीग़ करूँ और मुझे अपना नायब कर दिया है। कहा मेरे लिये कहा आप जानिये और और रसूल जानें मुझ से तो कुछ नहीं कहा। मुझ से तो बस यही कहा है कि सूर–ए–बरात की तबलीग़ कर दिजिये। ख़िदमते रसूल में आये। अजीब जुमले में ये कहते हैं कि आपने मेरे सिर्पुद एक फरीज़ा किया था और जब लोगों की गर्दनें मेरी तरफ उठने लगीं लोग देखने लगे कि कौन लिये जा रहा है " अज़लतनी" तो अपने माज़ूल फ़रमा दिया गोया मतलब ये है कि या तो दिया ही न होता या माज़ूल न किया होता पहले तो सूर–ए–बरात दिया और जब लेकर चला तो आपने माज़ूल कर दिया क्या मेरे बारे में कोई आयत उतरी? रसूल (स0) ने फरमाया और कोई आयत नहीं उतरी है लेकिन जिबरईले अमीन ने मुझ से आकर कहा कि उन आयत की तबलीग़ कोई नहीं कर सकता या आप खुद या वो मर्द जो आप से हो। और मैं क्या करूँ कि अली (अ0) के अलावा कोई और मुझ से है ही नहीं। सलवात।

रजुलुम मिनका का मिस्दाक तो सिवा–ए– अली (अ0) के और कोई है ही नहीं। अजीब जुमला कहा है कि जब लोगों की गर्दनें उठने लगीं मेरी तरफ तो आप ने माज़ूल कर दिया। मैं रोज़ यहाँ मजलिस पढ़ने आता हूँ आपको मालूम है दस दिन पढ़ूँगा।

जब मैं बैठा हूँ मिम्बर के ऊपर और कोई हैरत से देखे कहे अरे ये कौन साहब आ गये हैं ये आज मिम्बर पर फँला साहब कैसे आ गये जहाँ रोज़ कोई बात होती रहती है हैरत से लोग नज़र उठा के देखते नहीं हैं।

लेकिन पढ़ता मैं था रोज़ एक दिन मेरी तबीयत खराब थी किसी और को भेज दिया अपनी जगह पर तो अब पूरा मजमा देख रहा है कि ये कौन पढ़ रहा है? क्यों पढ़ रहा है? भई क्या हुआ? क्या वाकेआ हुआ? ये कहाँ से आ गये तो मालूम हुआ कि जब किसी को नई नई कोई चीज़ मिल जाती है तो हर एक हैरत से देखा ही करता है। मालूम होता है कि अली (अ0) के लिये ये फज़ीलत मिलना नई चीज़ थी ही नहीं। ये तो इत्तेफ़ाक़ से उनको मिल गई थी। लेहाज़ा हैरत से लोग देख रहे थे। रसूल (स0) ने बताया मैं रोकता नहीं अरे मैं तो चाहता हूँ कि जो फज़ीलत हासिल करना चाहे वो हासिल करे। मगर मैं क्या करूँ जब अल्लाह ही नहीं चाहता कि कोई फज़ीलत दूसरे को मिले। और अल्लाह तो उसको देता है जो हकदार होता है। और जानता है कि मजमे में जाकर काफिरों के सामनें मेरा पैगाम वही पहुँचा सकता है कि जिसके दिल पर रोब ग़ालिब न होगा।

जिसके चेहरे पर ख़ौफ़ का असर न होगा। जिसकी ज़बान में लुकनत न होगी कौन है जो न एक से डरता हो और न दस से डरता हो न हज़ार से डरता हो, जो ग़ालिबे कुल्ले ग़ालिब है वो जायेगा और जाकर तबलीग़ करेगा। तो सूर–ए–बराअत ग़ज़ब का सूरा था जहाँ ये ऐलान है कि हम से तुम से कोई मतलब नहीं आइन्दा कदम न रखना मक्के में चूँकि ग़ज़ब से इब्तेदा है लेहाज़ा फसाहत व बलागत का तकाज़ा था कि रहमत की आयत शरू में न हो।

आयए रहमत है बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम उस अल्लाह के नाम से जो रहमान भी है और रहीम भी है। अगर इब्तेदा होती बिस्मिल्लाह जब्बारो कहारो तो कह दिया जाता जाओ तुम बिस्मिल्लाह के साथ पढ़ देना।

जब अल्लाह के साथ ही रहमान अररहीम उस अल्लाह के नाम से जो रहमान भी है और रहीम भी। और अब कहर की आयतें उसकी इब्तेदा में बिस्मिल्लाह कैसे हो ? सूर–ए–बराअत वो है कि जिसमें बिस्मिल्लाह नहीं है और इसके अलावा हर सूरा वो है जिसकी इब्तेदा बिस्मिल्लाह से हुई है।

सूर–ए–रहमान में वहां पर अर्रहमान अल्लमल कुरआन वहां पर सिर्फ लफ्ज़ रहमान है।

लेकिन बिस्मिल्लाह में लफ्ज़ रहमान भी है और रहीम भी। बिस्मिल्लाहिर्रमा निर्रहीम। और जब सूर–ए– हम्द की इब्तेदा होती है तो फिर तकरार अलहमदो लिल्लाहे रब्बिलआलामीन अर्रहमानिर्रहीम तो वही रहमानियत व रहीमियत जिसका तज़केरा बिस्मिल्लाह में इसी रहमानियत व रहीमियत का ऐलान दोबारा सूर–ए–हम्द में। यानी ऐ मेरे बन्दे मेरी रहमानियत व रहीमियत को देखना है तो यूँ देख कि जब तू नमाज़ शुरू करेगा तो सबसे पहले सूरे में बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम कहेगा। कम से कम तेरी पाँच नमाज़ो में दस रकअतें वो होंगीं जिसमें सूर–ए–हम्द पाया जाता होगा और दुसरा सूरा वो तो कम से कम दिन में बीस मरतबा तो मेरी रहमानियत व रहीमियत का ऐकरार करेगा, और बीस मरतबा तो सिर्फ बिस्मिल्लाह के ज़रिए से जब तू सूरऐ हम्द शुरू करेगा तो फिर कहेगा, रहमानिर्ररहीम। और सूर–ए–हम्द भी हर नमाज़ में दो मरतबा लेहाज़ा बीस मरतबा बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम। कह कर मेरी रहमानियत व रहीमियत का ऐकरार और तीस मरतबा सूर–ए–हम्द की तिलावत करके अर्रहमानिर्रहीम। कहने का ऐकरार कम से कम दिन में चालीस मरतबा तेरी ज़बान पर मेरी रहमानियत व रहीमियत का ऐकरार आ जाये, मैं कब रहमान हुँ मैं कब रहीम हूँ ऐ मुसलमानो! ज़रा सोच और गौर करो कि मेरी रहमानियत व रहीमियत तुझे कहीं और नज़र आयेगी, क्या मुझ से बढ़ कर कोई तुझ पर मेहरबान हो सकता है, क्या मुझ से बढ़ कर तेरे ऊपर कोई रहम करने वाला हो सकता है, सबक़ते रहमती गज़बी मेरी रहमत मेरे गज़ब के आगे–आगे चलती है, देख तूने गुनाह किये, तूने मासियतें कीं, तुमने नाफ़रमानी की, ज़रा सोच तो किस की नाफ़रमानी की, अरे जिस ने इतनी नेअमतें दीं, जिस ने तुझ पर इतनी नेअमतों की बारिश कर दी। और तूने नाफ़रमानी भी उन्हीं आज़ा से की जो मेरे दिये हुऐ ज़बान मैंने दी थी मेरी ही दी हुई ज़बान को मेरी ही मुखालेफत में खोला, कान मेरे दिये हुऐ थे मेरे ही दिऐ हुऐ कानों से उन आवाज़ों को तूने सुना जो मुझे ना पसन्द, तुझे कूवते समाअत दी गयी है। बड़ी नेअमत है अरे इसी के ज़रीऐ तो इंसानियत ने तरक्की की अगर ये कूवते समाअत न होती तो गुज़िशता उलूम मुझ तक न पहुंचते फिर मेरे उलूम दूसरे तक मुंतकिल न होते इंसानियत ठहरी रहती, कुवते समाअत थी। जिस के ज़रिऐ एक दूसरे के ख़यालात मुंतकिल होते रहे इन ख़यालात के इंतेकाल की बिनाऐ ऊपर एक दूसरे से राबेता कायम रहा तरक्की होती रही देख तेरी कुवते नुतक भी इसी कुवते समाअत की मोहताज है इसलिऐ मादरज़ाद, बहरे गूंगे, भी होते हैं, लफज़े सुनी नहीं तो बोंलें क्या तो इतनी अज़ीम नेअमत इसको मेरी नाफरमानी में तो सर्फ न कर किस ने मना किया है कि खुशनुमा आवाज़ें न सुन, लेकिन क्या ये ज़रूरी है कि तू मेरी दी हुई समाअत को सर्फ कर दे, तो इन आवाज़ों के सुनने में जो मुझे नापसन्द, आप, अरे बैठे हुऐ हैं, कारखाने में काम बता रहे हैं, थक जायेंगें कुछ तो तफरीह होना चाहिऐ, लेहाज़ा अगर कोई कैसेट लगा दिया किसी तमाशे का तो आप क्यों बेकार खफा हो रहे हैं, अरे कोई तफरीह भी तो चाहिऐ है, कुछ दिल का बहलावा भी तो चाहिऐ है, कुछ कोई दिल पसन्द आवाज़ अगर कानों में आ रही हो तो आने दीजिऐ, ज़रा वक्त कट जायेगा, मगर मैं कहूँगा दिल पसन्द देखिऐ खुदा पसन्द खुदा पसन्द देखिऐ, आपके दिल ने तो आवाज़ पसन्द की लेकिन इसी के बिना पर अगर अज़ाबे इलाही के मुसतहकेक बन गये, और अल्लाह ने कहा क्या मैंने इसीलिये कान दिये थे कि उससे वो आवाज़ें सुन कि जो तुझे बुराइयों की तरफ दावत देने वाली, जो तेरे जज़बात में हैजान पैदा करने वाली हैं जो तुझे गलत कामों पर डालने वाली आवाज़ें क्या इसीलिये कूवते समाअत दी थी, मैं क्या अर्ज़ करूँ, दोस्तदाराने अहलेबैत (अ0) अल्लाह और उसके रसूल (

सल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम) के मानने वाले अपने को मुसलमान नहीं मोमिन कहने वाले लेकिन जनाब अलामाते कयामत में से ये बात भी लिखी गयी है, रवायात में है कि गरीब व अमीर हर घर से गाने की आवाज़ें बलन्द होंगीं, रक्स व सरूद की आवाज़ें बलन्द होंगीं शायद सौ बरस पहले समझ में न आता अरे साहब वो तो नवाब साहब हैं जो बुला सकते हैं रक्कासा को बुलायें वो रक़्स करे और गाये, वो बेचारा फटीचर उसको दस रूपऐ दिन भर में कमाई के बाद मिलते हैं वो कहाँ से गाने वालियों को मोहय्या करेगा। लेकिन आज से हदीस की तसदीक है कि ज़रा सा खटका अबा दिया ज़रा सा हाथ फेरा तो वही आवाज़ गूंज रही है जो फलाँ क़स्र में थी, तो ये अलामते कयामत में था कि हर घर से गाने की आवाज़ें बलन्द होंगीं, आज देख लीजिए कौन घर ऐसा।

मोमिन के यहाँ, भी बड़े मोमिन हैं पाकबाज़, लेकिन जनाब रेडियो खुला हुआ है ट्रांजिस्टरर और रेडियो की अगर बिजली नहीं भी है तो वो काम दे रहा है और क्यों खाली गाने पर इकतेफ़ा हो सूरत व शक्ल भी तो दिखाई दे तो शैतान ने एक नई चीज़ टेलीवीज़न की सूरत में लाकर दे दी , अगर टेलीवीज़न में हर वक्त नहीं आता तो रेडियो सही, गर्ज़ की कोई वक्त रक्स व सरूद और फहशा से महफूज़ न रहे तो कुदरत ने जो नेअमतें दी उसको उसी की नाफ़रमानी में सर्फ़ करना, हाथ दिये थे उसने कितनी बड़ी नेअमत, पैर दिये थे उसने कितनी बड़ी नेअमत, ज़बान दी थी उसने कितनी बड़ी नेअमत। मगर हम ने क्या किया! उसकी हर नेअमत तो उसकी नाफ़रमानियों में सर्फ़ किया कि तू देता जा हम नाफ़रमानी करते जायेंगें, मगर क्या इस रहमान व रहीम का फैज़, अरे कि नाफ़रमानी खैर गलती हो गई कमज़ोर बन्दा है नफ़्स केकाबू में आ गया ठोकर खा गया तू देख घबरा तहीं किसी मंज़िल पर पहुँच जा, मैंने तौबा का दरवाज़ा तेरे लिये खेल दिया है सदबार अगर तौबा शिक्सती बाज़ आ, अरे सौ मरतबा तौबा तोड़ चुका है फिर भी शरमाया नहीं फिर सच्चे दिल से तौबा कर ले तो फिर मैं तौबा कबूल करने को तैय्यार, रिवायतें बताती हैं कि शैतान निकला ये कह कर मालिक मैं तो बहकाता रहूँगा हर तरफ से घेर लूँगा, दायीं तरफ से भी आऊँगा बायीं तरफ से भी आऊँगा, ला क़ऊदुन्ना ना लहुम सेरातकल मुसतकीम।

अजीब दावा है ठाठ हैं तेरे सीधे रास्ते पर जम कर बैठ जाऊँगा इधर से कोई गुज़र ही न सके बड़े ज़ोर से कहा है यकीनन हतमन तेरे सिराते मुसतकीम पर जम कर बैठूँगा, दायीं तरफ़ से बायीं तरफ से सामने से पसे पुश्त से सीधे रास्ते पर जम कर बैठ जाऊँगा, शैतान ये कह कर चला और इधर ये निदा आई अरे तुम ने चौराहा तो रोक लिया, अपने खयाल में तो हर रास्ता बंद कर दिया लेकिन सिमतें चार नहीं हैं सिमतें छः हैं अब हर तरफ से घेर, लेकिन दो सिमतें रह गयीं, एक बलन्दी की और एक पस्ती की तो सुन ये चार राहें ये चौराहा तेरे लिये और ये दो राहें मेरे लिये जो भी सर रख देगा शरमिन्दा होकर या हाथ उठा लेगा, दोआ के लिये बख्शता चला जाऊँगा, किसी मंज़िल पर तो बाज़ आ जा, किसी मंज़िल पर तो तौबा कर ले, अगर ग़लती हुई है, बन्दा है मासूम नहीं गलती हो गई गलती होना काबिले ऐतेराज़ नहीं, गलती पर जमा रहना काबिले ऐतेराज़ है शरमिन्दा तो हो जा तर्क का तो इरादा कर ले तू वो अरहमरराहेमीन है।

जो गुनाहों के बाद भी कह रहा है कि आ मेरे दरवाज़े पर, हर दरवाज़ा बंद हो जाये मेरा दरवाज़ा खुला रहेगा, हर एक मायूस करके पलटा दे, मेरे यहां से मायूस न पलटेगा, अदालतों में, कोर्टो में खुदा न खवास्ता काश कोई मोमिन न जाये इल्ज़ाम के साथ, दीन के लिये जाये, इस्लाम के लिये कुर्बानी पेश करे लेकिन किसी

गलत कदम की बिना पर खुदा करे कोई इसका मौका न आये कि वो जाये अदालत के सामने, खुदा न ख्वास्ता किसी से गलती हुई पहली मरतबा पहुँचा, गलती हो गयी थी पहली मरतबा पहुँचा, अदालत ने देखा मामूली जुर्म भी है पहली मरतबा है उन्होंने कहा चूँकि पहली मरतबा जुर्म किया है, लेहाज़ा छोड़ा जाता है, मगर पहली मरतबा , और दूसरे ही दिन फिर पकड़ के आगए तो अब अरे कमबख़्त तू तो कल ही गया आज फिर आ गया, जितना जुर्म बढ़ता जाता है सज़ा में शिद्दत होती जाती है, लाक़दरे रहम अरे इससे क्या एक मरतबा दो मरतबा हर मरतबा रहम तो ये है जो पहली ख़ता मुआफ करती है और इसके बाद सज़ा लाज़िम क़रार दी जाती है और वो बारगाहे इलाही है कि हर जुर्म के बाद नेदा आती है कि अब तो बाज़ आ जा, अब तो बाज़ आ जा, जनाबे मूसा अ0 हैं और क़ारून इल्ज़ाम लगाता है इस्मते जनाबे मूसा (अ0) पर, जनाबे मूसा (अ0) क़ारून के पास जानते ही हैं आप वो क़ारूनी दौर, खज़ानों की भरमार, क़ारून कहता है इतनी दौलत थी कि समझ लिजिये कि खाली खज़ानों की कुंजियां इतनी थीं कि एक आदमी उठा नहीं सकता था इतनी दौलत, और एक मरतबा हुक्म दिया जाता है कि जिनके पास दौलत जमा है, दौलत ई वो ज़कात अदा करें, सब से बड़ा दौलतमंद उम्मते आले मूसा (अ0) में था, मोमित था यानी मोमिन का मतलब ये कलमा पढ़ता था, जनाबे मूसा (अ0) को मानता था, हुक्म दिया कि अपनी दौलत में से ज़कात निकालो, कितनी।

कहा चालीसवाँ हिस्सा, आह आह चालीसवाँ हिस्सा कोई चीज़ नहीं निकाल दूंगा, अब जो आकर खज़ानों से अलग करना शुरू किया देखा वो ढेर लगा है, दौलतमंद जितनी दौलत बढ़ती जाती है उतनी ही दौलत की हिर्स बढ़ती जाती है इंसान कभी दौलत इसलिये नहीं जमा करता है कि कल क्या करूँगा बल्कि वो तो हिरीस (लालची) हो जाता है, वरना करोड़पती क्या नहीं जानते है कि मैं मर जाऊँगा ये सब रह जाएगा मेरे लिये इतना काम थोड़े देगा, मगर है हरीस, अब तो इतनी दौलत देखी कैसे निकालूँ दिल फट गया, अरे इतनी दौलत! अरे इतनी चाँदी इतना सोना, मगर वादा भी करके आया है कलमा भी पढ़ता है, और मुसलमान भी कहता है, अपने को, करे क्या! तो एक मरतबा सोचा कि खुद रसूल (स0) की रेसालत ही में लोगों को शक पैदा कर दे, एक फाहेशा औरत को राज़ी कर लिया, अरे भाई अरब दो अरब करोर दो करोर जहाँ तक वो राज़ी हो गयी हज़ार दो हज़ार में कल जब जनाबे मूसा (अ0) वाज़ कर रहे हों तो खड़ी हो जाना और इल्ज़ाम लगा देना वो राज़ी हो गयी फाहेशा थी हज़ार दो हज़ार में।

जनाबे मूसा (अ0) वाअज़ फरमा रहे हैं और इत्तेफाक से वाअज़ में वही फ़ाहेशा और ज़ेना के मुताल्लिक़ क्या अज़ाब है फ़रमा रहे थे तो एक मरतबा ये औरत खड़ी होती है और जनाबे मूसा (अ0) से कहती है कि क्या ये दुसरों ही के लिये या अपके लिये भी है जब मूसा (अ0) के चेहरे की शिकन देखी और उसने ये अंदाज़ा किया कि कितना बड़ा जुर्म हो रहा है, एक मरतबा थरथरा गयी, और थरथरा और कांप के कहा खुदा के रसूल (स0) मुआफ़ करना ये मैंने गलती की, आपका दामन पाक है, मुझे क़ारून ने आमादा किया था कि आप पे इल्ज़ाम रखूँ, कोई और ज़ुल्म होता तो जनाबे मूसा (अ0) मुआफ़ कर देते, लेकिन ये इसमत पर आँच आ रही थी एक मरतबा बारगाहे इलाही में अर्ज़ करते हैं कि मेरे मालिक! तूने देखा कि कारून ने मेरे ऊपर क्या–क्या इल्ज़ाम लगाया ''निदा आई कि'' ऐ मूसा (अ0) मैंने ज़मीन को अख्तियार दे दिया हुक्म दो ज़मीन गर्क कर लेगी, एक मरतबा हज़रत मूसा (अ0) ने ख़ेताब किया कारून की तरफ़ और हुक्म दिया ज़मीन को कि अब ग़र्क़

करो, ज़मीन फटी और ये टखनों तक ज़मीन के अन्दर धंस गया, आवाज़ दी ऐ मूसा (अ0) बड़ा गुनाह किया था, ग़लती कि थी, मैं तौबा करता हूँ लावी चूंकि ये खुद भी बनीइसराइल में से था, अजदादे जनाबे मूसा (अ0) और कारून में जो मुशतरक थी वो लावी जनाबे मूसा (अ0) ने गैज़ो ग़ज़ब से कहा ''मातकूलो इब्नुल लावी'' ऐ लावी के बेटे क्या कहता है फिर ज़मीन को हुक्म दिया कि ग़र्क़ कर ले, अब ज़मीन ने घुटनों तक ग़र्क़ किया फिर तड़पा और तड़प कर कहा मूसा (अ0) मुझ से बड़ी गलती हो गयी, मैं तौबा कर रहा हूँ सच्चे दिल से तौबा कर रहा हूँ फिर मूसा (अ0) ने कहा, मातकुलो या इब्निल लावी और ज़मीन को हुक्म दिया ग़र्क़ कर ले, ये चीख़ता रहा सत्तर मरतबा इसने जनाबे मूसा (अ0) को पुकारा और हर मरतबा उन्होंने कहा ज़मीन गर्क कर ले यहाँ तक कि ज़मीन में गर्क हो गया और अब जनाबे मूसा (अ0) मुनाजात के लिये काहे–तूर पर पहुँचे, '' यारब, यारब, यारब आवाज़ आयी निदा आई मातकूलो या इब्निल लावी ऐ लावी के बेटे क्या कह रहे हो, बस ये सुनना था कि एक मरतबा थरथरा गये मालिक क्या गलती हुई, ऐ पालने वाले क्या क़सूर हुआ एक मरतबा आवाज़ आयी कि कारून ने मेरा इतना गुनाह किया मगर मैंने तो सज़ा न दी और तुम को सत्तर मरतबा पुकारा और तुम ने सुना नहीं मगर वो था इसी काबिल की ज़मीन में ग़र्क़ हो जाये, सत्तर मरतबा तुम्हें पुकारा एक मरतबा मुझे न पुकारा तो मालूम हुआ वो अरहमर राहेमीन जो हर गुनाह के बाद कह रहा है आ जाओ अब आ जाओ मेरे दरबार में अब उसके बाद भी अगर कोई न आये तलबे मगफेरत के लिये तो क्या वो इसका हकदार नहीं है फिर तो क्या वो कह सकता है फिर तो अरहमर राहेमीन कब, कि मुझे जहन्नम में डाल दिया, अरे इतने दरवाज़े खुल थे तूने क्यों न फिर उससे रहमत को तलब कर लिया, मेरी मग़फ़ेरत थी सिर्फ यही नहीं बल्कि उसने तुम्हें रहमत के वसीले भी दे दिये, रहमत के ज़रिऐ भी दे दिये ऐसे दरवाज़े बता दिये कि वहाँ पहुँच जाओ तो रद नहीं होगी दुआ, खुद कुरआन ने कहा है कि कहीं अगर ये असतगफार करें गुनाह के बाद, वसतगफिर लहुमर्रसूल। रसूल उनके लिये इसतगफार करें गुनाह के बाद, वसतग़फ़िर लहुमर्रसूल।

रसूल उनके लिये असतग़फार करें, लवा जदुल्लाह तवाबर्रहीमा। तो अल्लाह को बड़ा तौबा कबूल करने वाला पायेंगें, क्यों इसलिये कि अल्लाह तो है ही गफ्फ़ार लेकिन वो चाहता है कि मुझ तक आओ वसीले से आओ मुझ तक आओ, ज़रिऐ से आओ, इमाम जाफरे सादिक़ (अ0) बीमार हो गये, अपने एक साथी को बुलाया दो सौ ज़ादे राहला था जा सफर की मंज़िलें मदीने से तय करता हुआजा करबला और जा कर मेरे जद की कब्र के पास मेरी सेहत की दोआ कर उस सहाबी ने घबरा कर कहा फरज़न्दे रसूल (अ0) क्या आप खुद इमाम नहीं हैं? वो भी इमाम आप भी इमाम क्या आप तलब करेंगें तो रद हो जायेगी दुआ, कहा नहीं मुझे यक़ीन है कि मेरा रब मेरी दुआ को रद नहीं करेगा, मगर हम हर शय को उसके दरवाज़े से तलब करते हैं हम हर शय को उसके रास्ते से मांगते हैं, अब उसके बादवो मशहूर व मारूफ हदीस इमाम ने फ़रमाई जो आपकी सुनी हुई है। फ़रमाते हैं, अल्लाह ने मेरे जद की शहादत के बदले में दुनिया में उनको तीन शरफ दिये हैं, वो आखरत के शरफ़ तो अलग दुनिया में तीन शरफ़ दिये हैं वो शरफ़ कौन अशशेफा तुर्बतेही हुसैनी तुरबत को शफ़ा का ज़रीआ बनाया, आप क्या कहते हैं करबला की ज़मीन को ख़ाके शिफ़ा की जिसको मरीज़ अगर ब कस्दे शफ़ा खाले तो मर्ज़ दूरहो जाये इस्तेजाबद्दुआ तहता कुब्बही, दुसरा बदला ये दिया कि कुब्हए हुसैनी को दुआओं की कबूलीयत का मरकज़ बना दिया, अलइमामतो फिज़्ज़रीआ तीसरा शरफ़ ये दिया कि हसन (अ0) और हुसैन

(अ0) दोनों भाई, नूरे रेसालत के टूकड़े, दोनों सरदारे जवानाने जन्नत लेकिन शहादते हुसैन (अ0) की जज़ा ये थी कि अलइमामतो फिज़्ज़रीआ इमामत को नस्ले हुसैन (अ0) में रखा, वो हुसैन (अ0) की नस्ल ज़ैनुल आबेदीन (अ0) अली रज़ा (अ0) मोहम्मद बाक़र (अ0) जाफरे सादिक (अ0) मूसा काज़िम (अ0) हैं, तो ये तीन शरफ दिये कौन? वो तो खुद नस्ले इमाम हुसैन (अ0) हैं, तो ये तीन शरफ़ दिये है तो चुंकि कबूलीयते दुआ कुब्बए हुसैनी के नीचे है, लेहाज़ा वहां जा जाकर मेरे लिये दुआ कर मालूम होता है कि हज़रत इमाम हुसैन (अ0) तो इब्तेदाही से ज़रीआ बने हैं, अरे अभी विलादत हुई है मलायका मुबारकबाद देने आये हैं मुबारकबाद देने वालों में फितरुस भी है वो जो अपने तरके औला की बिना पर रहमते इलाही से दूर हो गया था, हज़रत जिबराइले अमीन अ0 से ख्वाहिश करके बारगाहे हुसैनी में आ गया रसूल (स0) इस मुबारक मौके पर दुआ फ़रमा दें कि मेरी खता और गुनाह भी मुआफ हो जायें, तरके औला मुआफ हो जाये, सही कहा था उसने कुरान ने कहा था, वस्तग़फ़रा लहुमु रसूलुन रसूल (स0) इस्तग़फ़ार करें, जो कुरआन ने कहा था वही ख़्वाहिश कर रहा है, मगर एक मरतबा निगाहें रेसालत उठती है और गहवार–ए–हुसैनी पर थमती है फ़रमाते हैं अब अगर अपनी मग़फ़रत चाहता है तो जा जिस्मे हुसैनी से अपने को मस कर ले, शाबान के सिलसिले में ज़रा तवज्जो फरमायें आम किताबों में, मफ़ातीहुल जेनान में भी आम किताबों में शाबान के सिलसिले में हमारे इमामे ज़माना (अ0) ही से एक दुआ मरवी है और उस दुआ में ये है कि हज़रत इमाम हुसैन (अ0) से खेताब, ऐ जद्दे मआब आप के गहवारे से फितरूस ने पनाह ली गहवारे की और मैं आपके कब्र की पनाह लेता हूँ, ला ज़लफितरूस बिल महद, आपके गहवारे की पनाह ली है फितरूस ने और इस हदीस से मालूम हुआ कि जिस्म नहीं बल्कि रसूल (अ0) ने कहा था जा अपने को गहवार–ए–हुसैनी से मस कर, समझ में नहीं आया कि ये गहवारे की तरफ क्यों मुतवज्जे किया, शायद वजह ये हो कि सच्चे नबी–ए–अकरम (अ0) की नज़र में इतना पाक था कि जब तक तरके औला का धब्बा है न चाहते थे कि फितरुस काजिस्म मस हो यामुमकिन है वजह येहोकि अगर जिस्मे हुसैनी को कह देते तो दुनिया सोचती कि उसी वक्त तो खता मुआफ़ होगी जब हुसैन (अ0) रह जाये वो था गहवारा, गहवारा ज़रीय–ए–मग़फ़ेरत बना कर बताया कि जब महज़ ज़रिय–ए–मग़फ़ेरत बन सकता है तो वो कब्र क्यों ज़री–ए–मग़फ़ेरत नहीं बन सकती, जहाँ गहवार–ए–हुसैन (अ0) क़यामत तक रहने वाला है और फितरुस ने जिस्म को मस किया परवाज़ करके फलक पर पहुँचा, और कह रहा है ''मन मिस्ली मन मिस्ली '' अरे मैं तो इमाम हुसैन (अ0) के ज़रीऐ आज़ाद हुआ हूँ, हुसैन (अ0) के ज़रीऐ मेरे गुनाह मुझ से दूर हुऐ हैं, वो इब्तेदा थी कि जब एक गुनाहगार को आज़ाद करके बता रहे हैं कि आओ गुनाहगारों तुम्हें मुझ से बढ़ कर क्या वसीला कहाँ मिल सकता है, अरे जब हुर सा गुनाहगार मुझे वसीला करार दे ले और उसके गुनाह मुआफ हो सकते हैं तो लाख गुनाहगार सही तुम्हारा गुनाह तुम्हारा जुर्म हुर का सा तो नहीं हो सकता, अरे वो जुर्म था कि काँप रहा है, वो जुर्म था कि खुद थरथरा रहा है, वो जुर्म था कि खुद समझ रहा है कि मेरा जुर्म कैसे मुआफ होगा, सुनते हैं आप कि रात भर चैन नहीं आया, जब किसी बच्चे की प्यास से तड़पने की आवाज़ सुनता था तो दिल पर एक तीर लगता था, न मैं घेर कर लाता, न मेरा आका दुशमनों में असीर होता न ये बच्चों की ज़बान पर अलअतश की सदाएं आतीं, और सिर्फ यही नहीं , अरे पिसरे साअद के लशकर में है, क्या मशवरों से बे खबर है क्या नहीं जानता, क्या मशवरे हो रहे हैः क्या नहीं जानता कल क्या होने वाला है, क्या इसको खबर नहीं कि कल चरागे फ़ातेमा

(स0 अ0) गुल होने वाला है, क्या इसको खबर नहीं कि इसलिये कुछ लोग आमादा किये गये हैं, जो हुसैन (अ0) की लाश को पामाल कर डालें क्या उसको पता नहीं कि उन खैमों में आग लगाई जायेगी, क्या उसको खबर नहीं कि बीबीयों के सरों से चादर छिन्ने वाली है, ज़ैनब (अ0) व उम्मे कुलसूम (अ0) असीर करके कूफ़ा व शाम ले जाई जायेगीं, लेकिन हर बात के बाद दिल में अहसास अरे मेरा मौला कह रहा था मुझे मदीना पलट जाने दो अगर मैं रास्ता न रोकता तो आज मेरा आका इन मुसीबतों में क्यों गिरफ्तार होता, सुब्ह हुई रात भर जागता रहा, कभी खैमे में जाता है, कभी खैमों से निकलता है, सुबह हुई पिसरे साअद के पास आया एक मरतबा कहा, ''तक़ातल हाज़ा रजुल'' क्या इमाम हुसैन (अ0) से जंग करके ही रहेगा, एक बहादर अपने लशकर का सरदार कह रहा है लेहाज़ा दिल बढ़ाने लिये कहा कि हाँ–हाँ देखना ऐसी लड़ाई लडूंगा कि सरों और ढ़ाँचों के ढ़ेर लग जायेंगें कहा क्या कोई सुल्ह की सूरत नहीं कहा भई मैं क्या करूँ इब्ने ज़्याद नहीं मानता, बस ये सुनना था कि एक मरतबा उसने अपने घोड़े को ऐड़ दी चला दरिया की तरफ लोग समझे कि पानी पिलाने जा रहा है एक शख़्स कहता है मैं ने देखा कि हुर मैदान से घोड़े पर बैठा हुआ थरथरा रहा है, चेहरे का रंग ज़र्द है, जिस्म में थरथरी है, कहा मुझ से कोई पूछता कि कूफे में सब से ज़्यादा बहादर कौन है, तो तेरे अलावा किसी का नाम न लेता आज क्या है कि जिस्म पर थरथरी! खौफ से चेहरा ज़र्द, कहा ये जंग से मौत का खौफ नहीं अरे ये जहन्नम का ख़ौफ़ है, एक तरफ मैं जन्नत देख रहा हूँ, एक तरफ जहन्नम देख रहा हूँ, घोड़े को ऐड़ दी दरया कि तरफ़ लेकर चला लोग समझे पानी पिलाने लिये जा रहा है, इसलिये कहीं रोक न लिया जाऊँ, एक मरतबा जब सफों से निकला घोड़े का रूख हुसैन (अ0) के ख़ैमों की तरफ़ किया हुसैन (अ0) ने देखा बहादर आ रहा है दिल का जानने वाला इमाम, ज़मीर से वाक़िफ़ इमाम समझ चुका था कि किसलिये आ रहा है रिवायात में तशरीह तो नहीं है, मगर मेरा दिल कहता है एक मरतबा कहा होगा अब्बास इस्तेकबाल करो, अरे हुर आ रहा है मेरा मेहमान आ रहा है, आगे बढ़ा हुर, रिवायात की लफ्ज़ें मैदान में आया फौजों से निकला दोनों हाथ अपने रूमाल से बांधे आसमान की तरफ निगाह बलन्द की एक मरतबा कहता है पालने वाले तुबतोइलैका ज़रा गुनाहगार की सुन ले मुझ ऐसा गुनाहगार एक मरतबा हाथ जोड़ के कह रहा है पालने वाले तुबतइलैका ऐ मेरे मालिक तुझ से तौबा कर रहा हूँ।

अरे तेरे चहीतों के दिलों को मैंने दहलाया उसके बाद घोड़े को ऐड़ दी, हज़रत इमाम हुसैन (अ0) की खिदमत में आया घोड़े से कूदा जहलम से चेहरा छुपा हुआ हज़रत इमाम हुसैन (अ0) कुर्सी पर बैठे हैं, आगे बढ़ा कदमों को पकड़ लिया कहते हैं इमाम मन अनता इरफ़ा रासक? सर उठा तू कौन है ? कहा आका मैं मुजरिम हुर हूँ, मगर सर उठाऊँगा नहीं जबतक सनद न लेलूँ कि मुआफ कर दिया गया।

अब हज़रत इमाम हुसैन (अ0) यह नहीं पूछते कि मैं मुआफ तो कर दूं मगर उसके बाद मेरी नुसरत करेगा? मेरी मदद करेगा, उसने कहा आका सर न उठाऊँगा जब तक जुर्म मुआफ न हो जाये, हज़रत इमाम हुसैन (अ0) ने कहा मैंने भी मुआफ किया मेरे खुदा ने भी मुआफ किया, अब हुर उठा कहा फरज़न्दे रसूल (स0 अ0) जिस तरह सब से पहले रास्ता रोका है चाहता हूँ सबसे पहले जान भी दूँ, मैं नहीं जानता कि जब खैमे में खबर पहुँची होगी कि हुर आया है हिमायत करने, अरे जब हबीब की खबर मिली थी तो ज़ैनब (अ0) का दिल बढ़ गया, अरे वो दोस्त थे, जब ये सुना होगा कि जो अब तक दुशमन था वो मदद करने आया है, ज़ैनब अ0 के दिल की क्या हालत हुई होगी, और जब सुना

होगा कि वो जाँनिसार जा रहा है रूख़सत होकर तो ज़ैनब (अ0) के दिल पर क्या गुज़री होगी, कहा जिस तरह पहले रास्ता रोका उसी तरह पहले जान देना चाहता हूँ, हुसैन (अ0) ने कहा होगा कि ठहर जा मगर नहीं रूका और आया मैदाने जंग में और बाअज़ रिवायात में है कि अकेला नहीं आया था, ये साथ लड़के को लेकर आया था, एक मरतबा जवान की तरफ रूख किया और कहा फरज़न्द हर बाप के दिल की तमन्ना होती कि इस वक्त उस का नौजवान बेटा उसके सरहाने हो, मगर मेरे दिल की तमन्ना है कि आज हुसैन (अ0) के ऊपर तु अपनी जान फिदा कर, तुझको खाको खून से लोटता दूखूँ ऐ बेटा जा जाके हज़रत इमाम हुसैन (अ0) पर अपनी जान निसार कर दे, बेटे ने बाप के हुक्म के सामने सर झुका दिया। आगे बढ़ कर हमला किया। बहोत से दुशमनों को कत्ल किया। आखिर ज़खमों की वजह से घोड़े पर संभला न गया। ज़मीन पर गिरा।

बाप को आवाज़ दी, बाबा मेरी खबर लिजिए, हुर ने आगे बढ़ना चाहा, किसी का हाथ कांधे पर महसूस किया पलट कर देखा, देखा आका हुसैन (अ0) करीब खड़े हैं। ऐ हुर कहीं बूढ़े बाप जवान बेटों के लाशे उठाते हैं, ऐ हुर तुम ठहर जाओ मैं जाऊँगा।

आगे बढ़े रिवायत कहती है अभी आशूरा के दिन की इब्तेदा थी, आका की ताकत का आलम ये था कि घोड़े से उतरे बग़ैर झुके और ज़मीन से जवान का लाशा उठा लिया। लेकिन अज़ादारों! जितना–जितना दिन ढ़लता गया हुसैन की ताकत घटती गयी।

जब कासिम का लाशा लाये तो लाशा उठा तो लाये थे मगर आलम ये था कि सीने से सीना मिला हुआ और पैर क़ासिम के ज़मीन पर खत देते जा रहे थे और जब कड़ियल जवान का लाशा उठा के चले तो दो कदम से ज़्यादा न चल सके, कमर ने जवाब दे दिया, जलती ज़मीन पर अली अकबर का लाशा रख दिया।

अज़ादारों! अब हुर ने खुद बढ़ कर हमला किया, एक हज़ार शहसवारों का तन्हा मुाकबला करने वाला हुर, कुशते के कुशते लगा दिये दुशमनों ने चारों तरफ से घेर लिया। ज़ख्मी होकर घोड़े से गिरे, आवाज़ दी आक़ा गुलाम की खबर लिजिए। हाँ यह हुसैन (अ0) की मेहमान नवाज़ी थी कि जहाँ क़ासिम व अली अकबर के सरहाने पहुँचे थे वहाँ अपने मेहमान हुर के सरहाने पहुँचे।

आक़ा को गवारा न हुआ कि मेहमान का सर जलती ज़मीन पर रहे बैठ गये सर उठा कर ज़ानू पर रखा सर से खून बह रहा था, रूमाले सय्यदा निकाल कर ज़ख्मी सर पर बांधा । हुर ने हुसैन (अ0) के ज़ानू पर दम तोड़ दिया। मैं हाथ जोड़ कर आक़ा की ख़िदमत में कहता हूँ कि आका आपको गवारा न हुआ कि हुर का सर जलती ज़मीन पर रहे, ये आपकी मेहमान नवाज़ी थी लेकिन आक़ा आप भी तो किसी के मेहमान थे।

कूफे वालों ने खत लिख–लिख कर आपको बुलाया था। मगर ये कैसी मेहमान नवाज़ी थी कि बच्चों के साथ तीन दिन का भूखा प्यासा रखा, पानी देने के बजाए आपकी औलाद का खून बहाया जा रहा था गेज़ा की जगह पर तीरों और तलवारों के ज़ख्म थे। और अजीब मेहमानी थी कि बादे शहादत ऐलान हो रहा था कि सवारों उतरना नहीं , अभी नवास–ए–रसूल (स0) का लाशा पामाल होना बाकी है।

अज़ादारों! इधर के घोड़े उधर उधर के घोड़े इधर, दरमियान में नवास–ए–रसूल (स0) का लाशा। कोई नहीं था कि आगे बढ़ कर कहता कि उसाको पामाल न करो। इसे फातेमा (अ0) ने चक्कीयाँ पीस–पीस कर पाला है। हाँ सिर्फ एक दुखयारी बहन थी जो अपने को घोड़ों की टापों में डाले दे रही थी कि मुझे पामाल कर दो मेरे माजाए को पामाल न करो।